J. P.

फजूलखर्ची रोको

(खदेरन की माँ, भगजोगनी, बुलाकी, अशर्फी और गजराज चौबे बैठे हैं । सभी इस बात पर हँस रहे हैं कि अशर्फी बिल्ली की शादी कर रहा है । लेफ्ट राइट करता लोहासिंह आता है ।)

लोहासिंह : खदेरन को माई ई त तुम पूरा माजलिस जुटा लिया है । कवन कनकसन है भाई ? देखते हैं कि सौखीनी का सैनबोट असर्फी बाबू आउर मोटाई का बंपिलाट गजराज बाबू भी आ गई हैं ।

खदेरन की माँ : आ मार बढ़नी रे, राउर असरा देखत देखत इमदी सूख के छोहाड़ा हो गईल फजिरे निकलली से एह घरी आवत बानीं । कहाँ बिलम गइलीं ह ?

भगजोगनी : मलिकार के आज काल्ह एको घरी फ़ुरसत रहता ? दिन रात काम से फिनाइल रहते बाड़न ।

बुलाकी : त का चाहत बाड़ू ? तोहरे लेखा गोड़ में महावर आ हाथ में मेंहदी लगा के पाहुन बइठल रहस ?,

लोहासिंह : हमनी होमफरंट के चक्कर में था । लबटत फाटक जी के देखने चल गया । जइसे भारथ का सिवना में अचक्के चीन घुस गई ओइसहीं फाटक जी के बौडिय के डिस्टिक में बेरामी घुस गईल था । हम गोली खाने के कहा त बोला पेट में दवाई खाए के जगह रहित त एगो लड्डू आउर ना खा लेतीं ?

खदेरन की माँ : गजराजे बउवे से त फाटक बाबा के बाजी लागल रहे ।

लोहासिंह : हूं, त आपही हैं जिसको ओजह से फाटक जी घोलंड गई ?

बुलाकी : अरे ई सबबसोख हवन । इनका से फाटक बाबा पार पावस ?

भगजोगनी : पक्की मलिकार से बाजी लागी तब देखतीं बुलाकी मालिक बउवे जी जित हो जइहें ।

बुलाकी : पाहुन फउजी जवान हवन, जबिहें फुंकारे त बोल बोला दिहें । तीन चार घरी त इनका दाँत के खोदे में भुला जाई । पाहुन, बउवे जी आज तोहरा से बाजी लगावे आइल बाड़न । ना पाहुन त मूड़ फेर के अपने नाक लगावन ।

गजराज : ऐसा लोहा, ओजन के मामला में हमारे साथ तोहके एक दाई गुजरी के घरी । बड़ा नाँव सुनले रहीं ।

भगजोगनी : मलिकार के आज काल्ह एको घरी फुरसत रहता ? दिन रात काम से फिंचाइल रहते बाड़न ।

बुलाकी : तका चाहत बाड़ ? तोहरे लेखा गोड़ में महावर आ हाथ में मेंहदी लगा के पाहुन बइठल रहस ?,

लोहासिंह : तनी होमफरंट के चक्कर में था । लवटत फाटक जी के देखने चल गया । जइसे भारथ का सिवना में अचक्के चीन घुस गई ओइसहीं फाटक जी के बौडिस के डिस्टिक में बेरामी घुस गईल बा । हम गोली खाने के कहा ऊ बोला पेट में दवाई खाए के जगह रहित न एगो लहुए आउर ना खा लेतीं ?

खदेरन की माँ : गजराजे चउबे से त फाटक बाबा के बाजी लागल रहे ।

लोहासिंह : हूँ, त आपहीं हैं जिसको ओजह से फाटक जी घोलंट गई ?

बुलाकी : अरे ई सरबसोख हवन । इनका से फाटक बाबा पार पावस ?

भगजोगनी : परसो मलिकार से बाजी लागी तब देखलेब बुलाकी मालिक चउबे जी चित्त हो जइहें ।

बुलाकी : पाहुन फउजी जवान हवन, लगिहें धोखारे त गोल बोला दिहें । तीन चार पसेरी त इनका दाँत के खोढरे में भुला जाई । पाहुन, चउबे जी अब तोहरा से बाजी लगावे आइल बाड़न । तः पाहुन त मुंह फेर के ओने ताके लगलन ।

गजराज : भैया लोहा, भोजन के दंगल में हमरे साथ तोहके एक दाई जुझहीं के परी । बड़ा नाँव सुनले हई ।

तोहार उपरोहित टें बोल दिहलें, अब तोहार पारीं हो।

अशर्फी : चउबे जी हमार बनारसी पंडा हईं। बड़ा सुजनी से मोका जुटल बा। परसों हमरा बिलाई से बियाह बा। पूरी तैयारी कइले बानी। ओही दिन हो जाय तोहरा आ गजराज चउबे में फैसला। अब मुँह फेरला से ना फरिआई ?

बुलाकी : का पाहुन, अइसे मैदान छोड़ के हट जइब ?

खदेरन की माँ : जहिया से चीन से लड़ाई सुरुम भइल, ई का कुछ खात बाड़न ? गिनले दू गो रोटी खाके हाथ बार देलन। पहिले से एकदम बदल गइलन। अब इनका खाइल पियल नीमन लागत बा ?

भगजोगनी : बाकि जेतना हुलास से असरफी मालिक अपना बिलाई के बियाह करत बाड़न ओतना खरच केहू अपना बेटियो के बियाह में ना करत होई। सात गांव के नेवता बा। पूरा गाजा बाजा, किसिम किसिम के मिठाई......

खदेरन की माँ : आ मार बढ़नी रे, बिलाई के बियाह में सुनलीं कि झुमरो गवाता। तेहूँ गावे गइल रहिस न भगजोगनी ?

बुलाकी : त बे गांगो के झूमर होई ?

अशर्फी : त परसों बरिआत दुआर लगावे जरूर आवे के होई आ नेवतओ मंजूर कइल जाव।

गजराज : हमरे त जब तलक भैया भोजन के दंगल ना होई

बड़ी निरासा होई, का हो लोहासिंघ जी, हार मान गइल ?

खदेरन की माँ : अजो सुनत नइखी ई लोग का कहत बाड़न ?

बुलाकी : का पाहुन, तोहरा रहते केहू अइसे ललकार के चल जाई ?

भगजोगनी : मलिकार लवटलन। दादा रे देखिये के डर लागत बा।

लोहासिंह : असर्फी बाबू आउर गजराज बाबू, आप लोग के बतकही हम तबे से सुनता है आउर लोहू के घोंट पियता है। आप लोग के दिमाग खराब त नहीं हो गई है ? अकिल खप्तान त नहीं हो गया है ? मगज में भूंसा त नहीं भरा गया है ? दारु का निसा में हैं कि अफीम का पिनिक में हैं ?

गजराज : ई कइसन बात करत हउअ भइया ?

लोहासिंह : तुम इमदी है कि गोरु है ? डूब मरो चुरुवा भर पानी में। इस टेन कानपिटीशन करना है त खून देने का, सोना देने का, परडकसन बढ़ाने का कानपीटिशन करो। बाजी लगाना है त भारथ माता खातिर जान का बाजी लगाओ।

अशर्फी : चल हो गजराज जी, गलती भइल कि इनका के न्योता देबे अइलीं जा।

गजराज : हाँ भैया, आज कचहरी कुछ गरम बुझात हो।

लोहासिंह : खबरदार, अपना टगरी के हालट बोलिये। आप दूनो इमदी के सैनबोट हम गांव के लोग के

देखावेगा। आप लोग देस का तरक्का में लंगी मारनेवाला छठवाँ कालम का दस्ता है। इस बात के बहुत जरूरत है कि पाबलिग आपलोग के अच्छी तरे चीन्ह ले। बुलाकी मिजाज अर करके फेंफड़ा का पूरा तागद से बिगुल बजा के गांव के कालिंग करा।

(बुलाकी बिगुल बजाता है।)

मगजोगिनी : मलिकार त ई लोग के पूरा फजिहत कइलन। दुनो जाना के चेहरे उतर गइल।

खदेरन की माँ : त फजिहत ना करस। देस बहर का चीन के भगावे के तैयारी करता आ ई लोग के फिकिरे नइखे। एक जाना ठूंस ठूंस के खाए में मगन बाड़न आ दोसर जाना बिलाई के बियाह में हजारन रोपेया खरच करके जलसा करत बाड़न। आ मार बढ़नी रे।

(कोलाहल के साथ गांव के आठ दस लोग आते हैं— "का बात ह भाई? काहे बिगुल बाजल?")

बुलाकी : बइठीं सभे। पाहुन बतइहें कि काहे बिगुल बाजल ह। सानत रहीं।

(सभी बैठते हैं, गाँव के लोग हँसते हैं)

लोहासिंह : भाई लोग, आप लोग के हम एह खातिर बोलाया है कि गजराज आउर असर्फी का दरसन कीजिये। (हँसी) जिस टेन लद्दाख के मोर्चा पर दुस्मन का मोटर गस्ती मारता है, नेफा का फरंट पर बोमडीला से पांच मैल की दूरी पर दुस्मन के सेना का घेरा

पड़ा हुआ है, ऊ दुस्मन जिसको झूठ बोलने का फेनुगिलास संवसार का सब झूठ का रेकाड तूर दिया। झूठ तीन किसिम के हे, झूठ, सफेद झूठ, आउर चीनी झूठ। चीनी झूठ का मोकाल्वा नहीं है काहे कि उसको न ईमान से कनकसन है न धरम का भेलू है। अइसा हाइकलौटी का बलफबाज दुस्मन सिवान पर है, उसको भगाने खातिर सारा देस दाना दाना बचाता है, आउर ई दूनो भोज में खानेका कानपटीसन करके देस के गार्दिस में मिलता है। पूछिये आप लोग कि ई सब अइसा बदरेसन काहे करती है ?

(गाँव के लोग—बहुत खराब बात बा, अइसन बात ना होखे के चाहीं।)

गजराज : आदमी डट के खाई नहीं त काम कइसे करी ? तू केहू के खाइलो पियल रोक देब्या ? हद करत हउआ भाई ।

लोहासिंह : तुम्हारा पेट है कि बोरा है ? इमदी जीने के लिये खाता है, खाने खातिर नहीं जीता है। तुम त चीनी आकरमन करनेवाली सेना का हाल किया जो नेफा में आदिवासी भाई लोग के भेंडा, कुकुर आउर गदहा चोरा के खा गया। इस टेन सब चीझ के फजूलखर्ची रोकना है। अनाज बचा के तुम लड़ाई में मदद कर सकता है। तुम्हारा हर बचाया हुआ अन्न का दाना चीन पर आफत बन के टूट परनेवाला भारथ का बहादुर सिफाही के सहारा बनेगा। तुम्हारा हर बूँट बुलेट बन जाऊ, आटा अटैक में

तागद चहुँपाई, त्रा उर दुस्मन का ऊपर चारज करेगा, गेहूँ से गोला आउर मटर से मसिनगन किनाई, किरासन तेल बचाने से तोप के तैयारी होखी । जेतने ई सम चीझ बांची ओतने अपना फौज के तागद में बुलंदी आई ।

अशर्फी : धन त बियाह सादी में सब केहू खरचा करबे करेला । हमरा आउर केहू नइखे त अपना बिलाइये के बियाह में सवख पूरा करब । हम केकरा खातिर बचाई ? बोलीं ?

खदेरन की माँ : आ मार बढ़नी रे। बिलाई के बियाह खातिर इमदी अइसे ऊपर थापर होला ? खिसा बा कि मोहर के लूट आ कोयला पर छाप ?

बुलाकी : (गाकर) बिलाई चलली ससुररिया, चदरिया ओढ़ के ना ।

(सभी लोग हँसते हैं ।)

लोहासिंह : ई हंसने का नहीं रोने का बात है। हालट। हम बताता है, आपको किसको खातिर बचाना है। ई सवाल उस मातारी से पूछिये जे अपाना लइका बुढ़ौती के सहारा के फरंट पर भेज दिया है, उस दुलहिन से पूछिये जे अपाना नैन में एको ठोप लोर नहीं ले आया आउर बोला जे हमको एही बात के खुसी है कि हमारा मरद दुस्मन के पीठ नहीं देखाया। अपसवारथी का जिनगी जनावर का जिनगी है। इनसान ऊ है जे अपाना सुसैटिक के तरक्की खातिर जीता है, देश का इज्जत खातिर

जीता है। आप त इहां दोसाला ओढ़ के सौखीनी का पलेटफारम देखाता है, बेमतलब जलसा आउर भोज में हजारन रोपेया फूंकने पर तैयार है, पिलाट पर पिलाट खाके बंपिलाट बना फिरता है। कबहूँ सोचा है कि लद्दाख का फरंट पर, चौदह हजार फीट के ऊंचाई पर बरफ का आन्ही का बीच, हाड़ कंपा देनेवाला जाड़ा में, हमारा भारथ का जवान जे रैफल लेके चट्टान लेखा खड़ा है ऊ किसको खातिर मस्तो में परान निछावर करता है? अरे फजूलखर्ची सौखीनी में, जलसा में, भोज भंडारा में, सैर तमासा में, रोपेया आउर अनाज बरबाद करनेवाला। ऊ जवान तुम्हारा खातिर तुम्हारा सुख चैन खातिर, अपाना जान के तरहत्थी पर लेके, मउअत का साथ दिलग्गी करता है। तुमको उस जवान के खातिर अन्न का एक एक दाना बचाना है, काहे कि ऊ जवान, भारथ का सुख चैन के लुटेरा चीन के चैनमारी करके उसको अपना सिवाना से बाहर लखेदता है।

जब देस का इज्जते नहीं रहेगा त धन के का अंचार परी? तुम अपने फरंट पर नहीं लड़ सकता है त कम से कम अपाना धन से, सोना से, मेहनत से फरंट के तागद पहुँचाओ।

(गाँव के लोग—जरूर जरूर, जे अइसन ना करे ऊ पापी ह।)

तुमको धन आउर अनाज बचाना है, उनको खातिर जे लद्दाख का मोरचा पर हवाई दहाज से फरंट पर

रासन आउर असबाब पहुँचाता है। होल दुनिया में भारथ का बहादुर पैलट का जबाब नहीं है। भारथ का पैलट उहां हवाई जहाज उतारा जहाँ इमदी के खड़ा होना मोसकिल है। मौसिम के ई हाल कि छछात आफत लेखा पैंतरा बदलती है, आन्ही है, धुंध है, कुहासा है, कदम कदम पर खतरा के चुनौती है, बरफ का तूफान अलगे आफत ढाहती है बाकि वाह रे भारथ का पैलट जे परले का बीच बहादुरी से हंसता हुआ हवाई जहाज के चिरई लेखा नचाता गिरह मारता हुआ, पहाड़ के हस चोटी से उस चोटी पर चक्कर मारता रहा, आउर कबहीं अपाना डिप्टी में गाफलत नहीं किया।

(सभी लोग—भारथ माता की जै)

तुमको धन बचाना है नेफा का फरंट का बहादुर बवलदार मेजर संदागर सिंघ खातिर जे अपना कारतूस खतम होने पर चीनी का अटमैटिक रैफल छीन के, चीन के रैफल चीनी के मूडी पर इस्तेमाल करता हुआ, तीन दर्जन चीनी हमला करनेवाली बकलोल के ओहिजे भूंज के चोखा बना घाला आउर उसका अटमैटिक रैफल लेके कूँचमार किया।

(सभी लोग—मेजर सौदागर सिंह की जै)

तुमको धन आउर अनाज बचाना है, मउअत से मोकालवा करनेवाला बहादुर बाजीराम थापा खातिर

जे अकेले सात गो चीनी के मारते-मारते चाऊं माऊं बना दिया।

(सभी लोग—बाजी राम थापा की जै)

तुमको धन आउर अनाज बचाना है मेजर नायर खातिर जे, अपना कंपनी का साथ, चीनी चिटिन-बाज का अइसा धुरछक छोड़ाया कि ऊ सब फादर फादर चिचिया के भाग गई। तुमको धन और अनाज बचा के देना है, सेला के भयंकर मोर्चा जूझनेवाला जवानन खातिर जे दस दस दिन बिना अन्न पानी के देस का इज्जत बचावने खातिर ऊ रन रोपा कि संवसार के इतिहास में बहादुरी के ऊ नकसा कहीं नहीं लउकता है। (तालियाँ)

आज भी चीन सिवाना पर है, ऊ चीन जो मोम्पा लोग के लूटा, धोखा दिया, जिसके बात का विसवास नहीं, चालबाजी आउर चार सौ बीसी का जबाब नहीं। का अबहियों सोंचना बाकी है कि धन काहे बचाना है, फजूलखर्ची काहे नहीं करना है? भारथमाई माथा पटक पटक के रोदन करती है आउर आप लोग बिलाई का बियाह करते हैं? अनाज बरबाद करते हैं? किरासन तेल जियान करते हैं।

(कोलाहल—ई लोग के मुंह ना देखे के)

बुलाकी : मन त करता कि एह फजूल खर्चिन के मार के खराब कर दीं।

खदेरन की माँ : भगजोगनी, तनी ले आव त बढ़नी, ई लोग के बोखार उतारीं।

भगजोगनी : तुरंत ले आवतानी मलकाइन।

गजराज : भैया मारले का मरब्या? हमहन त अपने शरम से पानी-पानी हो गइलीं।

अशर्फी : हम त भोज भंडारा के फजूलखर्ची बन्न कइलीं आ बचन देत बानी कि जलसा में जे खरच होइत से देस खातिर देब बाकि हमरे लेखा ढेर लोग बा, सब के रोकीं।

लोहासिंह : हमको सबके पता है। अबहीं सब लोग के साथ जाके एक एक फजूलखर्च के हुलिया टैट करेगा। बुलाकी बिगुल बजाओ। रेडी, फजूलखर्ची फुलिस्टौप करनेवाली बटैलियन, अटेनशन, फारवड मार्च, लेफ्ट राइट, लेफ्ट राइट, लेफ्ट।

(लोहासिंह के पीछे पीछे पुरुष वर्ग जाता है।

(पर्दा गिरता है)

जवानों के लिये स्वेटर

बहुत जाड़ बा, हुहुहुहु आदि ध्वनियाँ करते बुलाकी, भगजोगनी, खदेरन की माँ और कंपाउंडर की पत्नी आग ताप रहे हैं ।)

लोहासिंह : (लेफ्टराइट करता हुआ आता है) खदेरन को माई, सांझ का टैन में बोरसी जरा के, गांव भर के जनाना जुटा के, तुम खाली कनफूसियस करता है ? एँ ? जिस टैन चीन भारत के धमकी देता है, उस टैन देस के तैयारी का कारज छोड़ के तुमलोग बतकही, गपास्टक आउर कनफूसियस में काहे समै बरंबाद करता है घंघरिया पल्टन ?

खदेरन की माँ : आ मार बढ़नी रे, मारे जाड़ के दाँत खटखट

बाजता, पछेया अइसन सनकत बा कि गत्तर-गत्तर डोल जाता, अब इमदी आग ना तापो, बोलो बतिआओ ना ? देखीं त कंटोपर साहेबके जनाना कइसन नीमन दोसाला ओढ़ के आइल बाड़ी।

भगजोगनी : ह ए मलिकार। मलकाइनो के एगो कंटोपराइने लेखा दोसाला आ सूटर आवे के चाहीं। देखते बनता। छुअला पर अइसन भोलाएम लागता कि बुझाता कि खरहा के पीठ पर हाथ धइले बानी।

कंपाडर की पत्नी : कोई ऐसा अच्छा तो नहीं है कि इत्ती तारीफ करो हो भगजोगनी वही उठा के ले आइन तो जरी कंधे पर डाल लिया। कल एको लौटा देंगे। घर भर के लिये काफी ऊनी कपड़ा मंगाना है। कल मेरे घर कम से कम ढाई तीन सौ का ऊनी कपड़ा अइहे। कल देखावेंगे असली चीज, देखोगी तो कहोगी कि का चीज है।

खदेरन की माँ : इनका कौनो सवखे नइखे। अबकी केहू के जड़ावर किनलन हं ? अपने अगडबम्मी सीव लेखा चिरकुट गांथ के घूमत फिरलन, उहे हाल हमनियों के कइले बाड़न। केहू के जाड़ लागो मा कुछ होखो, इनका कौनों दन फिकिर बा ? सांचे एही बात पर हमरा इनका से झगरा करेके मन करेला।

भगजोगनी : हम त मलकाइन घरे घरे घूमत बानी। सब केहू धान बेंच बेंच के ऊनी कपड़ा कीने के तैयारी कइले बा। काल्हे परसों देखब गांव में केतना कपड़ा आवता।

कंपाडरकी पत्नी : अरे बहन पैसा कौड़ी और हो है काहे लिये। जो सुख सवारथ है यहीं कर लेना है। आदमी पहिने

ओढ़ेगा नहीं तो कमाया काहे लिये ? हम तो कल सहर जाइये रहे हैं। तुम भी खदेरन की माँ चलो मेरे साथ।

लोहासिंह : बूझ गई, बूझ गई। आप हाइकलौटी का बदरेसन का बात सिखाता है कंटोपराइन साहेब। इसीके कहते हैं हँसुआ के बियाह में खुरपी के गीत। आ हऊ के ह ? कंपोटराइन साहेब का ननद है कि भउजाई ?

भगजोगनी : (हंसकर) अरे दोहर ओढ़ के बुलाकी मालिक न बइठल बाड़न ?

लोहासिंह : (हँसकर) अइसे घूघ काढ़ के बइठा है कि चिन्हइबे नहीं करता है। काहे चंपियन बिगुल बजावनेवाला, बाबू बुलाकी सिंग ?

बुलाकी : करेजा में दलक आ गइल बा पाहुन। बड़ा जाड़ बा। अइसन पाला परता कि हाथे थोड़ नइखे चलत।

खदेरन की माँ : जब से चीन से लड़ाई भइल, बुलाकी भैया गांजो पिये से किरिया खा लेलन। भला एगो दोहर से जाड़ा खेपाई ? ए जी हम बात कहीं साफ, काल्ह हमरो के एगो लाल दोसाला आ सूटर, आ एगो साड़ी मंगवा दीं ना त हम जात बानी खटबास पटवास लेबे। हम पइसा देब, घर भर के जड़ावर मंगा दीं। राउरो सब कपड़ा फाट गइल बा, भगजोगनियों कठुआइल रहत बिया, एवो सूटर बुलाकियो भैया के जरूरी बा।

लोहासिंह : जरूर मगवा देगा । अइसन गरम दोसाला ले आवेगा कि तुम उसको ऊपर तावा रखके रोटी पका लेगी। बाकि अबही नहीं। जब भारथ के सिवाना से एक एक चीनी भाग जाई तब।

कंपाउंडर कीपत्नी : कैसी बातें करो हो लोहासिंह ? जब तक लड़ाई चले तब तक आदमी ठिठुरा करे ?

लोहासिंह : (क्रोध) कौन ठिठुरता है कंटोपराइन साहेब ? हम लोग, कि लद्दाख का मोरचा पर लड़नेवाला जवान ? ईहाँ कवनो जाड़ा है ? एकइस हजार फीट का ऊंचाई पर, बरफ का ऊपर, हमारा भारथ का जवान कबड्डी खेलता है, मारक टैन करता है, पूरा जोस आउर बुलंदी का साथ सिवान का पहरा देता है। जाड़ा लद्दाख आउर नेफा में है, इहां कौन जाड़ा है ? लद्दाख के इयाद कीजिये जहाँ खौलत चाह के पियाली मुंह तक आते आते बरफ हो जाता है, रैफल एतना ठंढा हो जाता है कि छूने पर अंगुरी में फोरा पर जाता है, मारे ठंढा के हवाई दहाज का अंजन हालो गरम नहीं होता है, पियाज आउर टमाटर जम के पत्थल हो जाता है, बिना गरम पानी में उसिनले उसको छूरी से केहू काट नहीं सकता है। उहां जे जवान है, जे जान पर खेल के मौसिम आउर दुस्मन से दुतरफा लड़ाई लड़ता है, उसको सूटर नहीं पेन्हा के जे अपने पेन्हे उससे बढ़के बैकुफानावाला देसदरोह आउर का होखी ?

बुलाकी : हमरा सूटर फूटर ना चाही पाहुन। कोनो काम होखे त कह ? ल दोहर बीग देली। जेतने आदमी आलस करी ओतने जाड़ लागी।

लोहासिंह : चावस जवान। देह झार के बाघ का माफिक उठो, पटवारी जी सहर से जे ऊन ले आया है, उसको ले आओ आउर बिगुल बजाओ जिससे सबका मिजाज अप हो जाय।

बुलाकी : तुरंत पाहुन।

लोहासिंह : भगजोगनी, जाके गांव के मेहरारू सब के पकड़ के ले आओ।

(भगजोगनी जाती है बुलाकी बिगुल बजाता है।)

लोहासिंह : कंटोपराइन साहेब, जब घर में आग लाग जाई त उस टैन आप काजर करेगा ? डेरस पेन्ह के अपना लिफाफा के पोसकाठ बनावेगा कि आग बुतावेगा ? ई टैन सैनबोट देखाने का है कि देश के ईज्जत बचाने का है ? चुप काहे है ? आच्छा तुम बोलो बढ़नी बटेलियन का कप्तान, खदेरन को माई ?

खदेरन की माँ : सांचे कहत बानी जी, कंटोपराइन हमार मत मार देले रलीह। जब ले चीन सिवाना से भाग ना जाई, हमरा खातिर कुछ कीने के जरूरत नइखे। आ मार बढ़नी रे, ई कवन लुर कि दुआर पर दुश्मन ताक में बा, जवान लोग सिवाना पर ओह जाड़ा पाला में देस के रच्छा करता आ एहिजा मेहरारू लोग फैसन करी ! बज्जर परी अइसन फैसन के ?

लोहासिंह : चाबस खदेरन को माई, मिजाज अप।

कंपाउंडर की पत्नी : लड़ाई में भला हम औरतें का कर सके हैं ?

(कोलाहल के साथ कई औरतें आती हैं)

खदेरन की माँ : देखीं, भगजोगनी गांव के मरद मेहरारू लोग के बोला ले आईल। बइठीं सभे। बाहेन जी बइठ जाईं। भगजोगनी, ओनहीं बइठव, एने आवे में लजाता बा लोग।

(कोलाहल)

भगजोगनी : बइठीं सभे।

लोहासिंह : बइठिये, आप लोग बड़ा मोका पर चहुंपा। अबगे कंटोपराइन साहेब पूछता था कि चीन आउर भारथ की लड़ाई में भारथ के मेहरारू का कर सकती है? त हम कहते हैं कि भारत के मेहरारू का नहीं कर सकती है?

कंपाडर की पत्नी : मेरे कहे का ई मतलब कि सारा समै तो हमलोग का चूल्हे चक्की में निकल जा है।

खदेरन की माँ : आ कुछ हमनो के करे लाएक होखे त बताईं। हमनी के तैयार बानी। (औरतें—हमनी के का करे के, बताईं, हमनी के तैयार बानी।

लोहासिंह : भाई लोग आउर खास करके बहिन लोग, पछिला अक्टूबर का महीना में चीन धोखा करके हमारा मैकमोहन लैन पर छापा मारा। सिवाना पर हमारा बहुत थोड़ा जवान था। हमलोग ई उमेद नहीं किया कि चीन एतना दगा करेगी। ऊ चीनी–हिन्दी भाई-भाई का नारा लगाके, भाई का पावित्र लबज हरमेसा खातिर बदलाम किया। बाकी भारथ का थोड़ा सा बहादुर जवान उसको छाती में रैफल से ऐसा दसखत किया कि चीन के हुलिया टैट हो

गइल। आज चीन फिर धमकी देता है, अब जरूरत है कि देस का सिवाना पर जूझनेवाला बहादुर जवानन के साथ सारा देस जान के बाजी लगा दे। इस तैयारी में मेहरारू लोग बहुत बड़ा काम करने सकती है। मतारी आसिरबाद दे के बेटा का लिलार पर तिलक लगा देती है त बेटा एक बेर हहात जम्हराज से जूझ जाता है, बहिन परेम से भाई के हाथ में राखी बान्ह देती है त भाई मारे जोस के समुंदर का हल्फा माफिक पहाड़ फान जाता है, मेहरारू कमर में तरवार बान्ह देती है त मरद मारे उमंग के असमान चीर के दू खांडा कर देता है।

आज भारथ के सब नारी, रानी दुर्गावती, रजिया बेगम, आउर झांसी के रानी बन सकती है। जरूरत पड़ने पर रैफल चला के दुस्मन का हालत बिगाड़ सकती है बाकि घर में रह के भी भारथ का नारी लड़ाई में मदद चहुंचा सकती है।

(हमनी के तैयार बानी)

आपलोग परेम से लद्दाख का फरंट पर लड़नेवाला जवान के जब गरम सूटर बना के भेजेगा त ऊ सूटर कवच बन जाई, ऊ सूटर पेन्ह के भारथ का एक जवान सवा लाख चीनी आकारमन करनेवाली के चकनाचूर कर घालेगा।

चिटिनबाज चीन के कवनो ठेकाना नहीं है। इ सपनो में नत बूझिये कि लड़ाई खतम हो गइल। पूरा तैयारी कीजिये। मेहरारू लोग हाई कलौटी के नरियस बन के नरसिंग करता है आउर अइसा नीमन

बंडेज बान्हता है कि सिपाही के घाव फट्ट दे नीमन हो जाता है। आप लोग कटोपराइन से नसिंग सीखिये।

औरतें : (कटोपराइन जी हमनी के सिखाईं, हमनी के यही बान्हे के सीखब)

सहर का जनाना लोग पर्दा के सिसस्टम छोड़ के टेलीफूंक का काम, मटर चलाने का काम, कंटीन चलाने का काम सीखता है। गाँव के जनाना लोग भी आगे आना चाहीं।

माता लोग अपना लइका का पहला गुरू होता है। आप लोग के चाहीं कि भारत का सपूत लोग के निरभै बनावे, उसको एतना बहादुर बना दें कि ऊ मारते चटकन के चाऊं माऊं के चटनी बना घाले। देस के इज्जत खातिर अपाना जान के बाजी लगाने के तैयारी-हर लइका में करना, भारथ के बहादुर माता के पहिला करतब है।

आप जानाना लोग घर का लछमी है। आप लोग का मन देस का संकट काटैन में रंग-बिरंगी रसगुल्ला पाढ़ वाला साड़ी पर, मचलना चाहीं, साल दो साल पर मन नहीं ललचाना चाहीं, मरदु फुटानी देखाने खातिर कपड़ा कीने त उसको रोकना चाहीं। आज सब रूई, सब ऊन देस के सीमा का रच्छा करने वाला जवानन खातिर है। नया कपड़ा मत कीनिये। पुराना से काम चलाइये। पुराना कपड़ा बदल के बोइआम आउर बरतन नत लीजिये, उसको इस्तेमाल कीजिये धोती फाट जाय त रूमाल

बना दीजिये, कुर्ता फाटे त बाँह फार के गंजी बना दीजिये। मदर के आउर हितमित्र के लोटा के लोटा चाह नत पियाइये। चाह से समुन्दर पार वाला रोपेया आता है आउर बिदेसी रोपेया से अटमैटिक रैफल से चीनी आकरभन करनेवाली के दम सरक जाता है।

सबसे डबल कारज है, ऊन से जवानन खातिर सूटर आउर पैताबा तैयार करना। रूई गर्दा बनाना। पइसा जमा करके फरंट पर चौकलेट वाला मिठाई, चाह, काफी आउर खराब-नहीं होखने वाला सामान के सौगात भेजना। तब हमारा जवान बूझेगा कि हमारा साथ सउंसे देस का परेम है, तब न ऊ जान पर खेल के दुस्मन को गेट से आेट करेगा। बोलिये आप लोग तैयार हैं। एक हफ्ता के अन्दर इस गांव से पांच सौ सूटर फरंट पर जाना चाही। हाली बोलिये।

(कोलाहल)

भगजोगनी : बाकि मालिकार अतना कइसे संपरी ? एक सूटर में नाहियें त दस दिन लागेला।

लोहासिंह : खबरदार, हौसला का सिंगल डौन करती है ! आदमी चाहे त पहाड़ ढाह दे, चान सेरुज के गेना लेखा लड़ा दे, समुन्दर खोस जाय। महार रेजिमेंट का जमादार कँवले जिस जोस से साढ़े सतरह हजार फीट का ऊंचाई पर, कंधा पर अढ़ाई मन के मेसीन गन लाद के चार दिन में बिना दाना पानी के कारा कोरम पास दौलत बेग ओल्डी से नब्बे मैल मारच

किया, जिस जोस से लद्दाख का बहादुर स्काउट सरूप सिंह मुर्गा चोर, भेंडा चोर, बुद्ध का मठ लूटने वाली चीनी सेना के अकेले सात घंटा तक रोका, पांच से फैर किया आउर एको निसान नहीं चूका ओइसहीं आप लोग सूटर बीनियो।

बुलाकी : पाहुन ल ऊन ले अइलीं। मेहरारुन में बांट न दीं।

लोहासिंह : सरकारी ऊन कुमैटी से मिलता है बाकि जे अपने खाकी ऊन कीन के भेजे त आउर नीमन बात है। सूटर का सैज बुलन्द होनी चाहीं।

खदेरन की माँ : आ मार ओढ़नी रे, पांच सै के कहा सात से सूटर बिना जाई। गांव भर के मेहरारू मिल के हमनी के बिन घालल जाई। का बहिन लोग ? (कोलाहल-हमारा के पांच गो, हमारा के सात गो आदि)

बुलाकी : लिखवा त जा लोग। हाला ना। तू बहिनियां पूछ पूछ के बोल, भगजोगनी ते हूँ बोल। (कोलाहल हम दू गो सूटर, हम चार गो बीनब, हम दसगो) बापरे ! ई लोग त कपारे खा जाई, मरद के सम्हारल आसान बात बा बाकि मेहरारू लोग के समुझावल बड़ा मोसकिल बा। बहिनियाँ ई लोग के ले जा ओह कोठारी में। ऐहिजे तूँ बंटिह कंटोपराइन लिखत जइहें।

कंपाउडरकी पत्नी : मैं तो बुलाकी भैया अपने ऊन खरीद के दस स्वेटर दूंगी।

खदेरन की माँ : त हमहूँ ऊन कीन के जवानन खातिर पनरह गो सूटर बीन देब। चल बहिनी सभे, तुरन्त बीने में हाथ लगाइये देबेके।

(कोलाहल)

भगजोगनी : चलीं सभें, गावलो जाई बिनलो जाई ।

(सभी औरतें "बीन-बीन जवानन के सूटर सजनी जे भारथ माता के आस" गाती हुई जाती हैं ।)

लोहासिंह : चाबस, बुलाकी ! बिगुल बजाओ, उल्टा सीधा फंदा लगवाती हुई जवानन खातिर सूटर बीनने वाली घंघरिया पलटन, रेडी, अटेनशन । फारवर्ड मार्च । लेफ्ट राइट, लेफ्ट राइट, लेफ्ट राइट ।

(पर्दा गिरता है)

देश द्रोहियों से सावधान !

(लफ्ट राइट करता लोहासिंह राम भरोसे नामक एक आदमी को पकड़ कर लाता है जो अनाधिकारी तौर पर राष्ट्रीय सुरक्षा कोष के नाम पर चंदा वसूल रहा था ।)

लोहासिंह : लेफ्ट राइट, लेफ्ट राइट, हाल्ट, बइठ ।

रामभरोसे : सरकार, हमरा के छोड़ देल जाव । गुरू किरिये हम कान कनैठी देत बानी । अब हम ई गल्ती ना करब ।

लोहासिंह : अरे जंगल के चिरई अब तुम पिंजड़ा में बाझ गई है । अब तुम भाग नहीं सकती है । तुम देस के मोसीबत का नजाएज फैदा उठाती है ! लूट में

चरखा नफा का खिलकट देखाती है ? तुम्हारे जइसा सिकार त हम खोजता फिरता है ।

राम भरोसे : हमरा कुकुर कटलस कि हम रउआ से चंदा के जिकिर कहलीं । हम का जानी कि रउए अतना कडियल निकलब । एक डपट में हमार दम सरक गइल । बहुत दिन के आदत बिगड़ल बा । कबो बाढ़ के नांव पर, कबो अनाथालय के नांव पर चंदा मांग के रोजी चलावत रहीं ।

लोहासिंह : एही से अबो जब हम लोग देस खातिर चंदा करता है तुम पाबलिक पर हाथ साफ करके सब अमदनी गपाक से लील जाने का फेर में थी । नकली रसीदो छपा लिया है ।

राम भरोसे : अब ई काम कबो ना करब । गुरू किरिये । रउआ बिसवास करीं । हमरा के जाये दीं ।

लोहासिंह : एक त हमहीं तुमको नहीं छोड़ेगा काहे कि तुम्हारा जइसा देस दरोही का नाक पर आलू रखके चैन-मारी करने में हमको बहुत सवाद मिलता है । उससे तुम्हारी जान बाँचियौ जाई त खदेरन को माई तुम्हारा जइसा चार सै बीस के अत्तह बढ़नी फिकेसन करेगी कि तुम्हारा परान फट दे मू जाई । ओहू से बांच गया त भगजोगनी तुम्हारा बेलमुंड पर करिखाह हांडी भड़ाक से इस्तेमाल करेगी । बाबू बुलाकी सिंघ का खीस तुम जनबे नहीं करता है । लागेगा कम्मल परेड कराने त बोंकला छूट जाई आ ओहू से बांच गई त हमरा फाटक बाबा मंतर का